ISSN: 2347-2723 IMPACT FACTOR : 3.3754(UIF) VOLUME - 5 | ISSUE - 1 | AUGUST - 2017

REVIEW OF LITERATURE

पर्यावरण संरक्षणः स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण

(एक कदम स्वच्छता की ओरः इलाहाबाद के विशेष संदर्भ में)

धरवेश कठेरिया[1] सुरेश वर्मा[2] निरंजन कुमार[3] प्रणव मिश्र[4]
अविनाश त्रिपाठी[5] पद्मा वर्मा[6] अम्बरीश सिंह[7]
1. सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
2. 3. 4, पीएच.डी. शोधार्थी, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
5, 6. एम. फिल. शोधार्थी, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
7 विद्यार्थी, एम.ए. जनसंचार (2013.15), जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

सारांशः

धर्म की नगरी इलाहाबाद में स्वच्छता अभियान जोरों से चल रहा है। कहा जाता है जहां स्वच्छता है वहां ईश्वर का निवास होता है शोध में प्राप्त आंकड़े यह दर्शाते भी हैं कि इलाहाबाद के नागरिक धर्म के साथ–साथ स्वचच्छता अभियान में भी बढ़–चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। आंकड़ों पर गौर करें तो इलाहाबाद शहर के 82 प्रतिशत नागरिक स्वच्छता अभियान से जुड़े हैं। कुछ प्रतिभागी जहां स्वच्छता अभियान में जानी–मानी हस्तियों के कारण जुड़े हैं वहीं कुछ प्रतिभागी आसपास के वातावरण को साफ करने के उद्देश्य से। शोध में प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शोध अभियान के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ इसके विस्तार के लिए स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करना होगा। आम नागरिकों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना ही सरकार का मूल उद्देश्य होना चाहिए। स्वच्छ भारत अभियान के बाद से स्वच्छता हेतु सामाजिक सहयोग भी बढ़ रहा है। स्वच्छता अभियान में गांधीजी का नाम और विचारों को जोड़ने से स्वच्छता अभियान का फैलाव ज्यादा हो रहा है क्योंकि गांधीजी के विचारों पर लोगों का भरोस है। स्वच्छता अभियान में जयादातर प्रतिभागी राजनीतिक लाभ के लिए नहीं बल्कि आसपास के वातावरण को स्वचछ रखने के उद्देश्य से जुड़े हैं।

शब्द कुंजीः अभियान, इलाहाबाद, सपना, स्वच्छता, गांधी, पर्यावरण, जागरुकता, मोदी, ।

उपकल्पनाः

- स्वच्छ भारत अभियान के विस्तार में गांधी के नाम की महत्वपूर्ण भूमिका है।
- स्वच्छ भारत अभियान से इलाहाबाद शहर स्वच्छ हो रहा है।
- स्वच्छ भारत अभियान का इस्तेमाल राजनीतिक रुप में किया जा रहा है।
- स्वच्छ भारत अभियान लोगों को जागरूक करने में सफल रहा है।

उद्देश्यः

अध्ययन को स्वरूप प्रदान करने के लिए कुछ उद्धेश्य तय किए गए हैं जो इस प्रकार हैं–

- स्वच्छ भारत अभियान में वर्तमान सरकार के दृष्टिकोण का अध्ययन।
- स्वच्छता अभियान के माध्यम से लोगों में आ रही जागरूकता का अध्ययन।
- इलाहाबाद शहर में स्वच्छ भारत अभियान का अवलोकन।
- स्वच्छता अभियान के प्रति आम लोगों की दृष्टि का अध्ययन।

शोध प्रविधिः

प्रस्तुत शोध अध्ययन 'पर्यावरण जागरुकताः स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण (एक कदम स्वच्छता की ओरः इलाहाबाद के विशेष संदर्भ में)' में शोध को ध्यान में रखते हुए निम्न पद्धतियों का उपयोग किया गया है–

- निदर्शन पद्धतिः अध्ययन को मूर्त रूप देने के लिए उद्देश्यपरक निदर्शन के अंतर्गत इलाहाबाद शहर का चयन किया गया। इलाहाबाद शहर के शहरी इलाकों में रह रहे लोगों का चयन निदर्शन के माध्यम से किया गया है।

शोध उपकरणः

प्रश्नावलीः अध्ययन को स्वरूप प्रदान करने के लिए इलाहाबाद के शहरी क्षेत्रों में रह रहे लोगों से प्रश्नावली के माध्यम से उनके राय और विचारों को जानने का प्रयास किया गया है। तथ्य संकलन के लिए बंद प्रश्नावाली का उपयोग किया गया है तथा प्रश्नावली का अंतिम प्रश्न खुला रखा गया है जिसके माध्यम से प्रतिभागियों के विचारों को भी शोध में शामिल किया गया है।

अनुसूचीः भाषाई विविधता/शिक्षा का स्तर आदि कई बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए उनसे राय और विचार जानने के लिए प्रश्नावली का उपयोग कई स्थानों पर अनुसूची के रूप में भी किया गया है। अनुसूची के माध्यम से उनके विचारों और सुझावों को भी शोध में शामिल किया गया है।

प्रस्तावना

मानव सभ्यता और संस्कृति आरंभ से ही स्वच्छता और पवित्रता पर आधारित रही है। दुनिया की सभी प्राचीन सभ्यताओं में स्वच्छता पर विशेष बल दिया गया है। स्वच्छता व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर आवश्यक है और दोनों का अपना–अपना महत्व है। मानव जीवन में स्वच्छता का विशेष महत्व है जहां स्वच्छता होती है वहां अच्छे विचारों का जन्म होता है। स्वच्छता के द्वारा ही मनुष्य अपने व्यवहार को सुव्यवस्थित करता है। देवता भी वहीं निवास करते है जहां स्वच्छता होती है। ऐसी मान्यता है की स्वच्छता के द्वारा मनुष्य को अपनी ईश्वर प्रदत्त आंतरिक शक्ति का आभास होता है।

इलाहाबाद उत्तर प्रदेश के प्रमुख धार्मिक नगरों में से एक है। यह नगर, जिसे प्राचीन समय में 'प्रयाग' नाम से जाना जाता था, अपनी संपन्नता, वैभव और धार्मिक गतिविधियों के लिए जाना जाता रहा है। भारतीय इतिहास में इस नगर ने युगों के परिवर्तन देखे हैं। बदलते हुए इतिहास के उत्थान–पतन को देखा है। यह नगर राष्ट्र की सामाजिक व सांस्कृतिक गरिमा का गवाह रहा है तो राजनीतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का केंद्र भी रहा। इलाहाबाद को 'संगम नगरी', 'कुम्भ नगरी' और 'तीर्थराज' भी कहा गया है। 'प्रयाग शताध्यायी' के अनुसार काशी, मथुरा, अयोध्या इत्यादि सप्तपुरियां तीर्थराज प्रयाग की पटरानियां हैं, जिनमें काशी को प्रधान पटरानी का दर्जा प्राप्त है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस नगर का प्राचीन नाम 'प्रयाग' है। यह माना जाता है कि चार वेदों की प्राप्ति के पश्चात ब्रह्मा ने यहीं पर यज्ञ किया था, इसीलिए सृष्टि की प्रथम यज्ञ स्थली होने के कारण इसे प्रयाग कहा गया। प्रयाग अर्थात 'यज्ञ'। कालांतर में मुगल बादशाह अकबर इस नगर की धार्मिक और सांस्कृतिक ऐतिहासिकता से काफी प्रभावित हुआ। उसने भी इस नगरी को ईश्वर या अल्लाह का स्थान कहा और इसका नामकरण 'इलहवास' किया अर्थात 'जहां पर अल्लाह का वास है।' परंतु इस संबंध में एक मान्यता और भी है

कि 'इला' नामक एक धार्मिक सम्राट, जिसकी राजधानी प्रतिष्ठानपुर थी, के वास के कारण इस जगह का नाम 'इलावास' पड़ा। कालांतर में अंग्रेजों ने इसका उच्चारण इलाहाबाद कर दिया।

वेद तथा पुराणों में उल्लेख के अनुसार इलाहाबाद अत्यन्त पवित्र नगर माना जाता रहा है, जिसकी पवित्रता गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती नदी के संगम के कारण है। वेद से लेकर पुराण तक और संस्कृति कवियों से लेकर लोक साहित्य के रचनाकारों तक ने इस संगम की महिमा का गान किया है। इलाहाबाद को 'संगम नगरी', 'कुम्भ नगरी' और 'तीर्थराज' भी कहा गया है। 'प्रयाग शताध्यायी' के अनुसार काशी, मथुरा, अयोध्या इत्यादि सप्तपुरियां तीर्थराज प्रयाग की पटरानियां हैं, जिनमें काशी को प्रधान पटरानी का दर्जा प्राप्त है। तीर्थराज प्रयाग की विशालता व पवित्रता के संबंध में सनातन धर्म में मान्यता है कि एक बार देवताओं ने सप्तद्वीप, सप्तसमुद्र, सप्तकुलपर्वत, सप्तपुरियां, सभी तीर्थ और समस्त नदियां तराजू के एक पलड़े पर रखीं, दूसरी ओर मात्र 'तीर्थराज प्रयाग' को रखा, फिर भी प्रयागराज ही भारी रहे। वस्तुतः गोमुख से इलाहाबाद तक जहां कहीं भी कोई नदी गंगा से मिली है, उस स्थान को प्रयाग कहा गया है, जैसे– देवप्रयाग, कर्णप्रयाग, रुद्रप्रयाग आदि। केवल उस स्थान पर जहां गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम है, उसे 'प्रयागराज' कहा गया। प्रयागराज के बारे में गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है–

को कहि सकई प्रयाग प्रभाऊ, कलुष पुंज कुंजर मगराऊ।
सकल काम प्रद तीरथराऊ, बेद विदित जग प्रगट प्रभाऊ।।

प्रयाग यानि इलाहाबाद नेहरू–गांधी परिवार, चन्द्र शेखर आजाद और कई अन्य वजहों से भारत की आजादी से पहले भी काफी चर्चित रहा। चूंकि महात्मा गांधी का निवास और राजनीतिक हस्तक्षेप इलाहाबाद से ज्यादा रहा इसलिए स्वच्छता मिशन यहां के लिए काफी महत्वपूर्ण हो जाता है। इलाहाबाद में हर 12 वर्ष पर महाकुंभ का आयोजन होता है तब इस शहर की आबादी दुनिया के किसी भी शहर की आबादी से कहीं ज्यादा हो जाती है। जहां आबादी होती है वहां गंदगी का होना लाजिम सी बात है। इलाहाबाद में यह मेला त्रिवेणी यानि गंगा यमुना और सरस्वती के संगम स्थल पर लगता है। गांधीजी का सपना था भारत को स्वच्छ करने का जिसे वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पूरा करने का बीड़ा उठाया है। इलाहाबाद के सबसे ज्यादा भीड़–भाड़ वाले स्थान सिविल लाइन पर भी गंदगी का साम्राज्य रहता है जिसे पिछले दिनों बहुत से स्व्यंसेवकों ने साफ किया पर यह सफाई कितने दिनों तक रहती है यह देखने वाली बात होगी।

आजादी के लगभग 70 वर्ष पूरे होने को हैं भारत विकासशील देश से विकसित देश की ओर तेजी से बढ़ रहा है और हर तरफ आगे बढ़ रहा है। बाजारवाद में भारत ने खुद को स्थापित तो कर लिया है पर भारत आज भी एक चीज से निजात नहीं पा सका है जिसे गंदगी कहे कचरा कहे या प्रदूषण भारत के जिस हिस्से में देंखे हमें गंदगी का अम्बार दिखाई देता है। भारत में हर चीज के लिए बड़े–बड़े आंदोलन व धरने देखने को मिलते रहे है पर गंदगी को हमने छोटा समझा। इसके लिए छोटे–छोटे स्तर पर प्रदूषण के खिलाफ आवाज बुलंद हुई पर समग्र रूप से गंदगी को दूर करने का प्रयास नहीं हुआ था। भारत की आजादी के प्रमुख सूत्रधार मोहनदास करमचंद गांधी जिन्हें आदर्श माना जाता है वो गंदगी के खिलाफ थे वे स्वयं सफाई अभियान करते थे उन्होंने जब देखा की लोग अभावों के साथ–साथ गंदगी के साथ भी जीवन यापन कर रहे हैं, तो उनके अन्तर्मन की चेतना में स्वच्छता के बीज पल्लवन हेतु उन्होंने ने स्वच्छता अभियान चलाया पर उनकी सोच भी संपूर्णता न पा सकी। भारत में गांधीजी ने गांव की स्वच्छता के संदर्भ में सार्वजनिक रूप से पहला भाषण 14 फरवरी, 1916 में मिशनरी सम्मेलन के दौरान दिया था। उन्होंने वहां कहा था 'देशी भाषाओं के माध्यम से शिक्षा की सभी शाखाओं में जो निर्देश दिए गए हैं, मैं स्पष्ट कहूंगा कि उन्हें आश्चर्यजनक रूप से समूह कहा जा सकता है, गांव की स्वच्छता के सवाल को बहुत पहले हल कर लिया जाना चाहिए था।' (गांधी वाङ्मय, भाग–13, पृष्ठ

222)। उन्होंने भारत को अंग्रेजों से मुक्त तो करा दिया पर गंदगी से वो भी भारत को मुक्त नहीं करा पाए न ही गंदगी को राष्ट्रव्यापी आंदोलन बना सकें।

लगभग 75 साल पहले गांधीजी द्वारा मैला ढोने की प्रथा खत्म करने की अपील के बावजूद यह आज भी कायम है। 1993 में बनाए गए कानून में किसी एक को भी सजा नहीं हुई और इसीलिए 2013 में हाथ से मैला ढोने की प्रथा को समाप्त करने के लिए नया कानून बनाया गया। राज्यों ने उस कानून को अभी तक लागू नहीं किया है। गुजरात सरकार ने तो हाथ से मैला ढोने वालों की मौजूदगी को ही नकार दिया है मिलेनियम डेवलपमेंट गोल (सहशताब्दी विकास लक्ष्यों) स्थायी विकास के लक्ष्यों में बदलने वाले हैं और भारत में अभी भी सुरक्षित स्वच्छता की स्थिति निराशाजनक है। विश्व स्टील के पेसीफिक इंस्टिट्यूट के आंकड़ों के अनुसार भारत की जनसंख्या के बहुत बड़े प्रतिशत के पास सुरक्षित स्वच्छता की पहुंच नहीं हो पाई है। संस्थान के अनुसार 1970 में केवल 19 प्रतिशत घरों (85 प्रतिशत शहर और 57 प्रतिशत गांव) में साफ सफाई थी। 2008 में यह 30 प्रतिशत जनसंख्या तक पहुंच सकी जिसमें 52 प्रतिशत शहरों और 20 प्रतिशत ग्रामीण इलाकों में थे। शहरी मूलभूत सुविधाएं गांवों से पलायन करके शहरों में आए लोगों तक पहुंच नही पाती। 2012 मे हमारे देश करीब 62.6 करोड़ लोग जो कि जनसंख्या का लगभग 50 प्रतिशत है, वह खुले में शौच करते हैं। (यूनिसेफ और विश्व स्वास्थ संगठन)। स्वच्छता केवल शौचालयों तक ही सीमित नहीं है। भारत में 2012 तक अपने सभी ग्रामीण क्षेत्रों में संपूर्ण स्वच्छता को पहुंचाने का काम किया है, लेकिन यह अभी दूर लगता है। 1981 में भारत की ग्रामीण जनसंख्या के एक प्रतिशत तक ही संपूर्ण स्वच्छता कार्यक्रम का लाभ पहुंच सका था। 1991 में यह बढ़कर 11 प्रतिशत जनसंख्या तक पहुंचा। 2001 में 22 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या को इस कार्यक्रम में शामिल किया गया कि इस कार्यक्रम का लाभ 50 प्रतिशत जनसंख्या तक पहुंच गया। संपूर्ण स्वच्छता कार्यक्रम के तहत प्रत्येक घर में और हर स्कूल में शौचालय का निर्माण और अबशिष्ट पदार्थ प्रबंधन करना शामिल है। इस कार्यक्रम का पूरी तरह कार्यान्वयन अभी दूर की कौड़ी लगता है।

स्वच्छता और सफाई के काम के विस्तार और स्वीकारने में सांस्कृतिक बाधाएं भी आड़े आती हैं। इस संबंध में दो विशेष बातें हैं। धार्मिकता और धर्मपरायणता, स्वच्छता और सफाई से ज्यादा महत्वपूर्ण है। जैसा कि मैंने पहले भी बताया है कि ऐसा भारत में ज्यादातर धार्मिक स्थलों पर देखा जाता है। गांवों कस्बों और मंदिरों के आसपास अक्सर बहुत गंदगी दिखाई देती है। इन जगहों पर कूड़े के ढेर, खुले में शौच, प्रदूषण और दूषित पीने का पानी आम बात है। ग्रामीण इलाकों और छोटे शहरों में जाति से संबंधित भावनाएं अभी भी प्रबल और प्रचलित हैं। बड़े शहरों में यह कम हैं। प्रदूषण की अवधारणा की सामाजिक स्वीकृति अभी जारी है जिसमें स्वच्छता और सफाई की उपेक्षा होती रही है।

भारत सरकार द्वारा देश में स्वच्छता बढ़ाने और देश के नागरिकों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने हेतु समय–समय पर अनेक कार्यक्रम चलाये गये है। उनमें सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान, निर्मल भारत अभियान और स्वच्छ भारत अभियान प्रमुख है इन अभियानों के मुख्य उद्देश्य खुले में शौच की परंपरा को पूरी तरह समाप्त करना और इसे इतिहास की घटना बना देना है। ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन के लिए सुरक्षित प्रबंधन प्रणाली को अपनाना, उन्नत स्वच्छता व्यवहारों को अपनाने के लिए बढ़ावा देना इत्यादि उद्देश्यों को प्रमुखता दी गयी है। स्वच्छ भारत अभियान को भारत सरकार द्वारा स्वच्छता के सबसे बड़े पैरोकार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्मदिवस पर दो अक्तूबर 2014 को प्रारंभ किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य अगले पांच सालों (2019) में स्वच्छ भारत का निर्माण करना है। स्वच्छ भारत अभियान में देश के प्रत्येक नागरिक से स्च्छता हेतु प्रति वर्ष 100 घंटे के श्रम दान की अपील की गयी है। 4 से 15 जनवरी तक उत्तर प्रदेश में हुए स्वच्छता सर्वेक्षण के नतीजे केंद्रीय शहरी विकास मंत्रालय ने जारी किए। इसमें उत्तर प्रदेश के सात शहरों को जगह मिली। इसमें इलाहाबाद जहां प्रदेश में नंबर एक पर रहा तो वहीं लखनऊ ने दूसरे नंबर पर अपना कब्जा जमाया। वहीं, 73 शहरों की ऑल इंडिया स्वच्छता रैंकिंग में इलाहाबाद 22वें तो लखनऊ 28वें नंबर पर रहा।

2014 में भारत में एक युग का परिवर्तन होता है और राजनीतिक शिखर पर एक बड़ा नाम नरेंद्र मोदी के रूप उभरा और उन्होंने कांग्रेस को परास्त कर भाजपा के नेतृत्व में बहुमत की सरकार बनाई और प्रधानमंत्री बनते ही उन्होंने सरदार पटेल, महात्मा गांधी, जयप्रकाश नारायण, दीनदयाल उपाध्याय जैसे आदर्शों को सामने रख कर कार्य करने का निर्णय लिया और 15 अगस्त को लाल किले से उन्होंने सबसे बड़ा संदेश जो दिया उससे पूरे देश में शौचालय बनाने पर बल दिया और महिलाओं व बच्चियों के लिए अलग से शौचालय निर्माण

की बात की साथ ही उन्होंने महात्मा गांधी के आदर्श को सामने रख कर भारत को गंदगी मुक्त करने का अभियान शुरू करने की बात की और 2 अक्टूबर, 2014 को स्वच्छ भारत अभियान का शुभारम्भ कर दिया जिसमें उन्होंने 2019 तक कचरा मुक्त भारत बनाने का संदेश दिया। इस कार्य को बड़ा रूप देने के लिए उन्होंने सचिन तेंदुलकर, अनिल अम्बानी, सलमान खान, शशि थरूर सरीखे 9 लोगों को चयनित कर ऐसे ही 9 का दल बनाने की बात की और उन्होंने स्वयं वाल्मिकी आश्रम में झाड़ू लगाकर अभियान शुरू किया और देखते–देखते उनके सभी मंत्री, केंद्रीय कर्मचारी, इस अभियान से जुड़ गये। झाड़ू चुनाव चिन्ह वाले आप पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल ने भी सफाई अभियान में भागीदारी की। आज हम सभी इस अभियान के हिस्सा है।

स्वच्छ भारत अभियान के तहत गांवों में गरीबी रेखा से नीचे जीवन–यापन कर रहे सभी परिवारों को स्वास्थ्यप्रद शौचालय प्रदान करना, बेकार पड़े शौचालय की मरम्मत कराकर स्वास्थ्यप्रद शौचालयों में बदलना, हैण्डपंप उपलब्ध कराना, सुलभ व सुरक्षित स्नानागार की व्यवस्था, निकास नालियों को ढंकना और नई नालियों का निर्माण, ठोस और द्रव कचरे के निस्तारण की उचित व्यवस्था, शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता, घरेलू और पर्यावरण संबंधी सफाई व्यवस्था इत्यादि मुद्दों को लाना है।

अपने उद्देश्य की प्राप्ति तक भारत में इस मिशन की कार्यवाही निरंतर चलती रहनी चाहिए। भौतिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिये भारत के लोगों में इसका एहसास होना बेहद आवश्यक है। ये सही मायनों में भारत की सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिये है जो हर तरफ स्वच्छता लाने से शुरु किया जा सकता है। ये बेहद जरुरी है कि भारत के हर घर में शौचालय हो साथ ही खुले में शौच की प्रवृति को भी खत्म करने की आवश्यकता है। मल ढोने की प्रथा का अंत होना चाहिए। नगर निगम के कचरे का पुनर्चक्रण और दुबारा इस्तेमाल, सुरक्षित समापन, वैज्ञानिक तरीके से मल प्रबंधन को लागू करना अतिआवश्यक है। खुद के स्वास्थ्य के प्रति लोगों की सोच और स्वाभाव में परिवर्तन लाना और खासकर साफ–सफाई की प्रक्रिया के विषय में जागरूकता फैलाने की अवश्यकता है। पूरे भारत में साफ–सफाई की सुविधा को विकसित करने के लिये निजी क्षेत्रों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर भी बल दिया जाना चाहिए। भारत के हर गांव और शहर में पेड़ों की कटाई पर दंड को और कड़ा किए जाने और अधिकाधिक पेड़ लगाने की आवश्यकता है।

हमें स्वच्छ भारत बनाना है पर हम सिर्फ झाड़ू लगाकर भारत को स्वच्छ नहीं बना सकेंगे। हमें अपनी सोच बदलनी होगी, हमें ऐसा माहौल बनाना होगा कि सड़क पर कचरा ही न फैले। हमें झाड़ू लगाने की नौबत ही न पड़े इसके लिए हमें नैतिक बल तो दिखाना होगा साथ ही हमें इसके लिए दण्डात्मक व्यवस्था भी लगानी होगी क्योंकि जब हम भारत में मेट्रो स्टेशन पर थूकने पर 200 रुपए के जुर्माने का बोर्ड पढ़ते है तो हम थूक आने पर भी अपनी थूक गटक जाते हैं। हम सिंगापुर एवं अन्य देशों का उदाहरण देखते हैं कि वहां पर गंदगी फैलाने पर कितना जुर्माना लगता है। यानी कुल मिलाकर हमें भारत को स्वच्छ बनाना है पर यह गंदगी व प्रदूषण झाड़ू से नहीं, स्वयं की सोच सफाई के लिए बना कर प्रयास करना होगा।

प्रभाव–

देश के अन्य स्थानों की तरह ही स्वच्छ भारत अभियान इलाहाबाद में भी बहुत ही जोर–शोर से शुरू हुआ जिसमे लोगों ने सफाई करते हुए अपना वीडियो सोशल नेटवर्किंग साइट पर शेयर किया। यहां तक कि सांसद और विधायक भी सड़क पर झाड़ू ले के आ गये। सड़के साफ, नालियां साफ जिधर देखो उधर सफाई। आम आदमी भी आखिर आम आदमी है और नई–नई चीज कुछ दिन तक अच्छी लगती है। यही हाल अब इस योजना का भी जान पड़ता है। अब न कोई बड़ा व्यापारी सफाई करते दिखता है, न कोई खिलाड़ी और न नेता न अभिनेता। फिर भी ज्यादा न सही पर कुछ तो असर आज भी देखने को मिलता है जैसे अब बहुत से लोग कचरा डालने के लिए कचरादान ढूंढते मिल जाते हैं। लोग अब पान खा कर सड़क पर थूकने वालों को टोकने लगे हैं या यूं कहें कि चिंगारी तो लग गई है, पर ये चिंगारी शोला कब बनेगी ये देखने की बात है। फिर भी अभी इस योजना को चले हुए ज्यादा वक्त तो नहीं हुआ है पर इसका ढीला रवैया पता नहीं पर मन में इसके सफल होने को लेकर शंका पैदा करता है । इस योजना का असर समाज के सबसे महत्वपूर्ण अंग युवा पर सबसे अधिक दिखाई पड़ता है। अब वो स्वच्छता के प्रति अन्य की तुलना में ज्यादा जागरूक दिखाई पड़ता है।

अभी हाल के दुर्गापूजा विसर्जन की बात करें तो पता चलता है कि इस बार देवी की प्रतिमा का विसर्जन हर बार की भांति किसी नदी या तालाब में नहीं बल्कि कृत्रिम तालाब बनाकर हुआ। यह बात भी हमें स्वच्छ भारत अभियान की जागरुकता का भान कराती है। आज लोग रेलगाड़ियों में सफर करते हुए कचरे को यूं ही नहीं गिराते अब कारण कोई भी हो सकता है स्वच्छ भारत अभियान या किसी ने ये करते हुए देख लिया तो हो सकता है कि वो उनकी साख पर ही सवाल न उठा बैठे। तमाम तरह की हिचकिचाहटों के बावजूद भी लोगों ने इसे थोड़ा ही सही पर अपनाया है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोग अब शौचालय बनवाने पर जोर दे रहे हैं। नालियां जो पहले खुली हुई बजबजाती रहती थी उस पर भी ग्राम प्रधानों की दृष्टि पड़ ही गई है जिससे अभी वो इसी अभियान के तहत साफ हो रही है, कब तक होंगी ये देखने वाली बात होगी। गांवों में जो शौचालय सोख्ते वाले थे उन्हें बदल कर बहने वाले बनाए जा रहे हैं। आजादी के इतने साल बाद भी लोग स्वच्छता को केवल घर में झाड़ू–पोछा लगा लेना ही समझते रहे थे पर इस अभियान ने उन्हें घर से निकाल कर गली की सफाई तक पहुंचा दिया है। अगर देश की प्रत्येक गली साफ हो जाए तो इस अभियान को सफल माना जा सकता है पर शायद अभी भी लोग इसे 'अभी दिल्ली दूर है' की दृष्टि से ही देख रहे हैं।

तथ्य विश्लेषण एवं आंकड़ों का प्रस्तुतिकरणः

प्रस्तुत शोध पर्यावरण जागरुकताः स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण (एक कदम स्वच्छता की ओरः इलाहाबाद के विशेष संदर्भ में) में अध्ययन से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि इलाहाबाद में स्वच्छता अभियान की स्थिति, इसकी लोकप्रियता और कार्य पद्धति को इलाहाबाद के निवासियों द्वारा कैसे लिया जा रहा है। प्रस्तुत शोध इलाहाबाद शहरी क्षेत्र में रहने वाले प्रतिभागियों पर विशेष रूप से केंद्रित है। तथ्यों और आकड़ों के संकलन के लिए निदर्शन के माध्यम से इलाहाबाद शहर के 300 लोगों का चयन सैंपल के रुप में किया गया है। जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के महिला और पुरुष वर्ग से प्रश्नावली/अनुसूची के माध्यम से शोध को मूर्त रुप दिया गया है। जिनसे स्वच्छ भारत अभियान में गांधी दृष्टिकोण से सबंधित प्रश्नों के माध्यम से उनके विचार और सुझाव लिए गए हैं।

प्रश्नावली में कुल 12 प्रश्नों को शामिल किया गया है। जिनमें 11 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं और 12वां प्रश्न प्रतिभागियों के लिए खुला रखा गया है जिनमें प्रतिभागियों से विषय से संबंधित विचार एवं सुझाव लिए गए हैं। प्रश्नावली के कुल प्रश्नों में से कुछ प्रश्नों का चित्रमय प्रस्तुतीकरण किया जा रहा है। जो इस प्रकार है–

1. क्या स्वच्छ भारत अभियान गांधी के सपनों को साकार करने का प्रयास है?
   उक्त प्रश्न के संदर्भ में 89 प्रतिशत लोगों ने हां के पक्ष में दिया उत्तर दिया जो यह साबित करता है। स्वच्छ भारत अभियान गांधी के सपनों को साकार करने का प्रयास है। इस अभियान को ज्यादातर लोग गांधीजी के स्वच्छता अभियान से जोड़कर देखते हैं।
2. स्वच्छ भारत अभियान में गांधी को जोड़ने के पीछे सरकार का क्या उद्देश्य है?
   उक्त प्रश्न के संदर्भ में सबसे ज्यादा मत 47 प्रतिशत लोगों ने स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के पक्ष में दिया है वहीं इस अभियान को 22 प्रतिशत प्रतिभागी विश्व पटल पर भारत की स्वच्छ छवि का निर्माण, 18 प्रतिशत लोग इसे गांधी के विचारों से जोड़कर देखते हैं और 13 प्रतिशत लोग इस अभियान को राजनीतिक लाभ की दृष्टि से देखते हैं। प्राप्त तथ्य यह दर्शाते हैं कि सरकार के द्वारा इस अभियान का उद्देश्य स्वच्छता के प्रति जागरूक करना है।

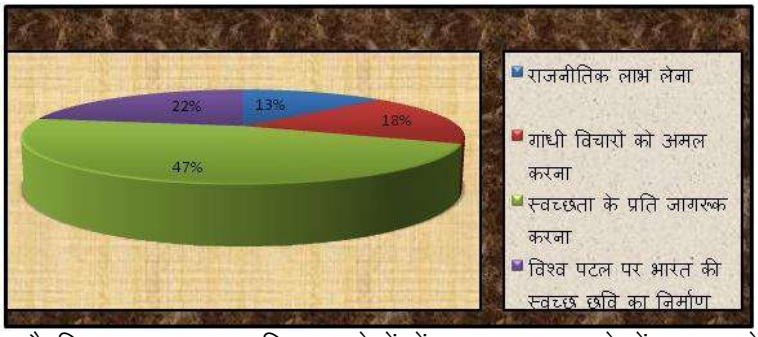

3. क्या आपको लगता है कि स्वच्छ भारत अभियान लोगों में जागरूकता लाने में सफल हो रहा है?
के संदर्भ में 82 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान लोगों में जागरुकता लाने में सफल हो रहा है वहीं 15 प्रतिशत लोगों ने बताया कि यह अभियान जागरूकता लाने में सफल नहीं रहा। आंकड़ों के आधार पर गौर करें तो यह अभियान आमजन को जगारूक करने में सफल रहा।

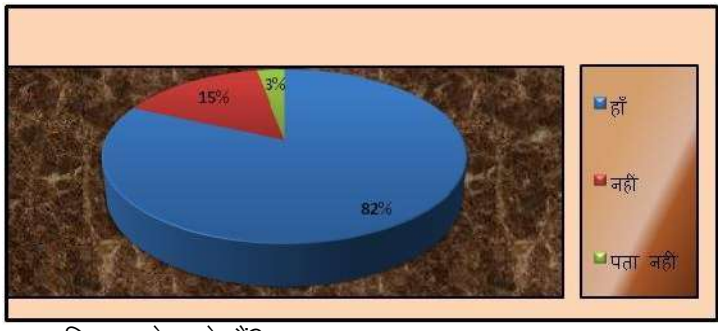

4. क्या आप स्वच्छ भारत अभियान से जुड़े हैं?
उक्त प्रश्न के आंकड़े चौकाने वाले सामने आए हैं। शोध में शामिल 82 प्रतिशत प्रतिभागी इस अभियान से जुड़े हैं। प्राप्त आंकड़े इस अभियान की लोकप्रियता को दर्शाते हैं।

5. स्वच्छ भारत अभियान से आप किस प्रकार जुड़े हैं?
90 प्रतिशत लोगों का मानना है कि वे स्वच्छता अभियान में आसपास के वातावरण को साफ करने के उद्देश्य से जुड़े हैं। तथ्य इस अभियान की सफलता को दर्शाते हैं। 5 प्रतिशत प्रतिभागी इस अभियान से प्रचार–प्रसार के लिए, 1 प्रतिशत लोग राजनीतिक कारणों से, छवि निर्माण के लिए 3 प्रतिशत और किसी के दबाव में आकर 1 प्रतिशत लोग इस अभियान से जुड़े हैं।

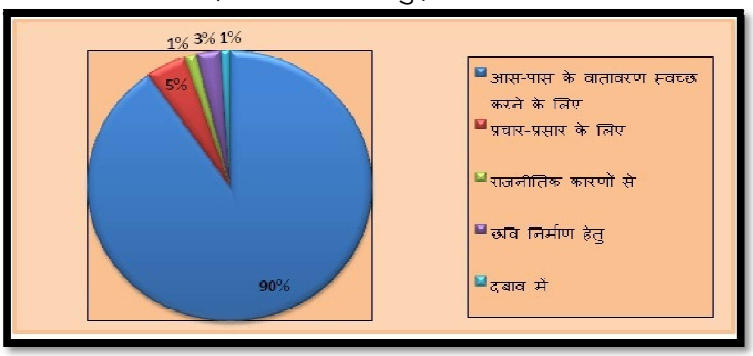

6. क्या स्वच्छ भारत अभियान के बाद से लोगों में गंदगी फैलाने वालों के प्रति विरोध का स्वर बढ़ा है?
प्रश्न के संदर्भ में 77 प्रतिशत लोगों का मानना है कि गंदगी फैलाने वालों के प्रति विरोध का स्वर बढ़ा है वहीं 19 प्रतिशत लोगों ने नहीं के पक्ष में अपना मत दिया है। 4 प्रतिशत लोगों ने पता नहीं के विकल्प को

चुना है। प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्वच्छता अभियान के बाद से लोगों में गंदगी फैलाने वालों के प्रति विरोध का स्वर बढ़ा है।

7. क्या आप स्वच्छता के नियमों का पालन स्थान विशेष के आधार पर करते हैं?
उक्त प्रश्न के संदर्भ में 52 प्रतिशत लोगों का मानना है कि वे स्वच्छता के नियमों का पालन स्थान विशेष के आधार पर करते हैं वहीं 45 प्रतिशत लोगों का मानना है कि वे स्वच्छता के नियमों का पालन स्थान विशेष के आधार पर नहीं करते हैं। आंकड़े यह दर्शाते हैं कि अभी अबादी के आधे लोग जहां स्थान विशेष के आधार पर स्वच्छता के नियमों का पालन करते हैं वहीं आधे लोग स्थान विशेष के आधार पर स्वच्छता के नियमों का पालन नहीं करते हैं। 3 प्रतिशत प्रतिभागियों ने पता नहीं का विकल्प चुना है।

8. क्या स्वच्छ भारत अभियान के बाद से गंदगी से होने वाली बीमारियों में कमी आई है? के संदर्भ में 71 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि स्वच्छता अभियान के बाद से गंदगी से हाने वाली बीमारियों में कमी आई है वहीं 29 प्रतिशत उत्तदाताओं का मानना है कि स्वच्छता अभियान के बाद से गंदगी से हाने वाली बीमारियों में कमी नहीं आई है। प्राप्त तथ्य यह दर्शाते हैं कि स्वच्छता अभियान के बाद गंदगी से होने वाली बीमारियों में कमी आई है।

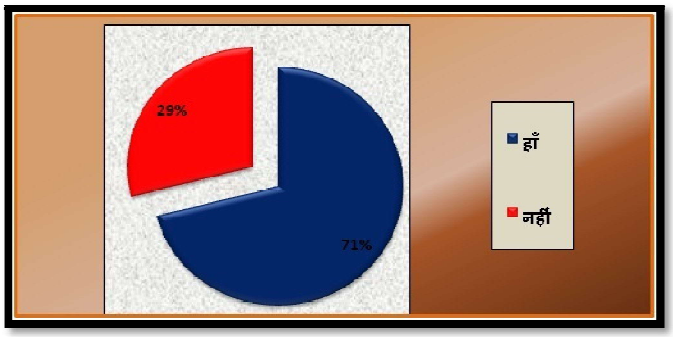

9. स्वच्छ भारत अभियान के बाद से स्वच्छता हेतु सामाजिक सहयोग बढ़ रहा है? 85 प्रतिशत मतदाताओं का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान के बाद से स्वच्छता के लिए सामाजिक सहयोग बढ़ा है वहीं 15 प्रतिशत लोगों का मानना है कि इस अभियान के बाद भी स्वच्छता हेतु सामाजिक सहयोग नहीं बढ़ा है। प्राप्त 85 प्रतिशत तथ्य यह दर्शाते हैं कि इस अभियान से स्वच्छता हेतु सामाजिक सहयोग बढ़ा है।

10. आप स्वच्छता अभियान में एक महीनें में कितना समय देते हैं? उक्त प्रश्न के संदर्भ में 60 प्रतिशत प्रतिभागी 1 महीने में स्वच्छता अभियान को 1 से 3 घंटा समय देते हैं। 21 प्रतिशत लोग 1 महीने में 3 से 6 घंटा, 1 प्रतिशत लोग 6 से 9 घंटा, 6 प्रतिशत लोग 9 घंटे से अधिक और 12 प्रतिशत स्वच्छता अभियान में समय नहीं देते हैं। आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ज्यादातर लोग स्वच्छता अभियान को 1 से 3 घंटा का समय देते हैं।

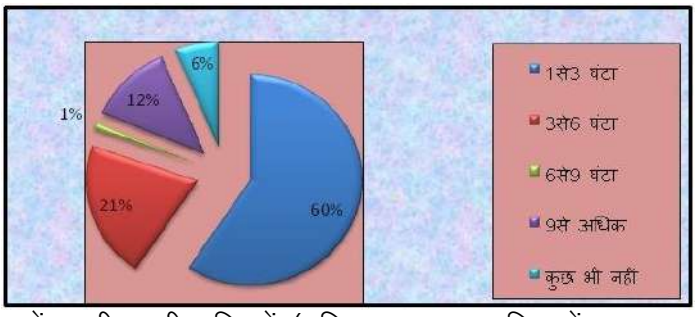

11. स्वच्छ भारत अभियान में जानी–मानी हस्तियों (अमिताभ बच्चन, सचिन तेंदुलकर, मुकेश अंबानी इत्यादि) के जुडने से अभियान में लोगों का जुड़ाव बढ़ा है?

उक्त प्रश्न के संदर्भ में 78 प्रतिशत लोगों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान में जानी मानी हस्तियों (अमिताभ बच्चन, सचिन तेंदुलकर, मुकेश अंबानी इत्यादि) के जुड़ने से इस अभियान में लोगों का जुड़ाव बढ़ा है वहीं 22 प्रतिशत लोगों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान में जानी–मानी हस्तियों के जुड़ने से अभियान में लोगों का जुड़ाव नहीं बढ़ा है।

12. स्वच्छ भारत अभियान पर अपने विचार एवं सुझाव दें?
उक्त प्रश्न के संबंध में अनेक प्रतिभागियों ने अपने विचार एवं सुझाव दिए जिनमें से कुछ को शोध में शामिल किया जा रहा है। जो इस प्रकार हैं–

सकारात्मक विचार (प्रश्न क. 12 के अंतर्गत):

- स्वच्छता जिसके बारे में बात करना बहुत से लोगों को हास्यास्पद लगता है, लेकिन हास्यास्पद तो यह है कि हम इस छोटी सी बात से भी परिपूर्ण नहीं है हमें गंभीर होना होगा और इसके लिए निश्चित और नियमित स्वच्छता का प्रण करना होगा तभी बनेगा स्वच्छ भारत, स्वस्थ्य भारत।
- स्वच्छ भारत अभियान भारत के उन्नति के लिए सहायक सिद्ध हुआ है।
- स्वच्छ भारत अभियान समाज के उत्थान को लेकर महत्वपूर्ण कदम है जिससे वातावरण शुद्ध होगा।
- देश कि छवि विश्व में सुधरेगी व पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, रोगों से मुक्ति, शहर सुंदर लगेगा।
- यह अभियान समाज एवं राष्ट्र के विकास के लिए एक अच्छा कदम है। हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति में स्वच्छता का विशेष महत्व रहा है परंतु आज की उपभोक्तावादी, संस्कृति से हर दिन प्रदूषण एवं गंदगी फैला रही है अतः इसे स्वच्छ करने की आवश्यकता है।
- हमें दूसरों के ऊपर या दूसरों को स्वच्छता के प्रति प्रेरित करने से पहले खुद को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना होगा, जरूरी नहीं किसी स्थान विशेष से शुरुआत की जाय मगर शुरुआत तो आवश्यक है जो कहीं न कहीं से शुरू होगी तो आपने आप से ही क्यों नहीं। हमें खुद को और अपने पास–पड़ोस को स्वच्छ रखने की आवश्यकता है जब हम स्वच्छ होंगे तो हमारा परिवार और एक परिवार से समाज, समाज से देश बस इसी से हम गांधीजी के 150वें जन्म दिवस अर्थात 2 अक्टूबर 2019 को उनके स्वच्छ भारत के सपने को पूरा कर सकते हैं।
- स्वच्छ भारत अभियान भारत को स्वच्छ करने व एक स्वच्छ छवि निर्माण करने हेतु एक उत्कृष्ट अभियान है जिसके माध्यम से लोगों को जागरूक कर उन्हें स्वस्थ्य बनाना प्राथमिक उद्देश्य है।

नकारात्मक विचार (प्रश्न क. 12 के अंतर्गत):

- स्वच्छ भारत अभियान अपने मूल उद्देश्यों से भटककर सिर्फ नेताओं तक सीमित है।
- इस कार्यक्रम के माध्यम से सरकार जनता में लोकप्रिय होना चाहती है। सरकार द्वारा लोकप्रियता के लिए किए जाने वाले तमाम प्रयोगों में से यह सबसे सरलतम प्रयोग है।
- स्वच्छ भारत अभियान का राजनीतिक लाभ हेतु प्रयोग किया जा रहा है।

सुझाव (प्रश्न क. 12 के अंतर्गत):

- इस अभियान को सभी स्तर पर लागू होना चाहिए साथ ही व्यक्तिगत तौर पर होना चाहिए। ऊंच नीच का भेद–भाव न रख कर सभी को मिल कर स्वच्छता अभियान में जुड़ना चाहिए।
- स्वच्छता के लिए अवश्यक है की पोलिथीन की फैक्ट्री बंद हो साथ ही इधर–उधर कूड़ा–करकट फेकने वालों को दंडित किया जाना चाहिए ।
- इस अभियान को कभी भी राजनीतिक मुद्दे से न जोड़ा जाए और न ही मात्र इसे कुछ समय का अभियान समझा जाए, क्योंकि ये हर व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह अपने घर–परिवार के साथ–साथ सम्पूर्ण वातावरण को स्वच्छ रखें।

- स्वच्छता को जितना नैतिकता से जोड़ा जाए उतना ये अभियान सफल होगा और सभी को अपनी अन्तः प्रेरणा से इस कार्य में सहयोग देना होगा।
- स्वच्छता का महत्व बचपन से ही हमारी भावी पीढ़ी को बताना होगा ।

शोध निष्कर्षः

स्वच्छ भारत अभियान में गांधी दृष्टिकोण शोध विषय पर आंकड़ों द्वारा निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये है जो इस प्रकार से हैं–

1. स्वच्छ भारत अभियान गांधी के सपनों को साकार करने का प्रयास है जो समाज या देश में फैली गंदगी को साफ करने व लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक कर रहा है।
2. गांधी का नाम इस अभियान से जोड़ने का मात्र एक ही उद्देश्य है कि जिस प्रकार से गांधी किसी भी कार्य को करने के लिए जन की सहभागिता लेते थे उसी प्रकार से समाज के नागरिक भी गांधी के इस विचार को स्वीकार्य कर इस अभियान में अपनी सहभागिता प्रदान करें व वातावरण को स्वच्छ बनायें।
3. स्वच्छ भारत अभियान में गांधी के विचारों को जोड़ने के पीछे सरकार द्वारा राजनीतिक लाभ लेने का उद्देश्य के पक्ष में मात्र 13 प्रतिशत लोग ही मानते हैं, लेकिन इससे भी ज्यादा बड़ा उद्देश्य है कि लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना जिसके पक्ष में 48.6 लोगों ने अपना मत दिया है। शोध में शामिल ज्यादातर प्रतिभागी स्वच्छता अभियान को राजनीतिक रुप से न देखकर सामाजिक स्वच्छता की दृष्टि से देखते हैं।
4. शोध में प्राप्त आंकड़ो के अनुसार इलाहाबाद शहरी क्षेत्र के 82 प्रतिशत प्रतिभागी स्वच्छ भारत अभियान से जुड़े हैं।
5. प्रतिभागियों ने स्वच्छ भारत अभियान से जुड़ने का मुख्य कारण आस–पास के वातावरण को स्वच्छ करने का है।
6. ज्यादातर मतदाताओं के अनुसार स्वच्छ भारत अभियान के बाद से गंदगी फैलाने वालों के प्रति स्वर बढ़ा है। 50 प्रतिशत लोग स्वच्छता के नियमों का पालन स्थान विशेष के आधार पर करते हैं। यदि स्वच्छता नियम कठोर बना जाय तो स्वच्छ भारत का सपना साकार हो सकता है।
7. स्वच्छता अभियान के कारण गंदगी से होने वाली बीमारियों में कमी आई है।
8. स्वच्छ भारत अभियान के कारण स्वच्छता के लिए सामाजिक सहयोग बढ़ा है।
9. स्वच्छता अभियान में शामिल 59.3 प्रतिभागी एक महीने में 1 से 3 घंटे का समय देते हैं वहीं 6.3 प्रतिशत उत्तरदाता स्वच्छता अभियान में समय नहीं देते हैं।
10. 77.6 प्रतिशत प्रतिभिागियों का मानना है कि वे स्वच्छ भारत अभियान में जानी मानी हस्तियों के कारण जुड़े हैं।

शोध सुझावः

स्वच्छ भारत अभियान में गांधी दृष्टिकोण शोध विषय पर आंकड़ों द्वारा निम्नलिखित सुझाव प्राप्त हुए हैं जो इस प्रकार से है–

1. धर्म के नाम पर गंदगी फैलाने वालों पर कड़े नियम लागू होने चाहिए।
2. स्वच्छता को लेकर नियम बनाने से पहले आम जन को जागरूक करें।
3. स्वच्छता संबंधी नियम बनाते समय आमलोगों की भागीदारी सुनिश्चित करें।
4. स्वच्छता व्यक्तिगत नहीं सामाजिक जिम्मेदारी है इस पर अमल करें।
5. सरकार को स्थानीय स्तर पर भी जाने माने व्यक्तियों को इससे जोड़ना चाहिए।
6. सफाई कर्मियों को अच्छे कार्यों के लिए पर्यावरण या स्वच्छता संबंधी पुरस्कार देना चाहिए।

शोध की उपयोगिता एवं भविष्य में शोधः

प्रस्तुत शोध 'पर्यावरण जागरुकताः स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण (एक कदम स्वच्छता की ओरः इलाहाबाद के विशेष संदर्भ में)' में विषय के माध्यम से वर्तमान समय में स्वच्छता अभियान के प्रभाव और उसकी लोकप्रियता को दर्शाता है।

शोध के द्वारा से यह ज्ञात करने की कोशिश की गई है कि इलाहाबाद शहर में स्वच्छता अभियान की पहुंच कितनी है? आम लोगों में इस अभियान की पहुंच एवं लोकप्रियता कैसी है? क्या स्वच्छता अभियान जैसी योजना से भारत स्वच्छ हो रहा है? या इस योजना के माध्यम से सरकार अपनी लोकप्रियता बढ़ा रही है आदि को परखना है। शोध की उपयोगिता स्वच्छता अभियान के विस्तार के साथ–साथ अभियान में आमजन की भागीदारी और सरकार की नीतियों को भी प्रदर्शित करती है।

क्या स्वच्छता अभियान जैसी योजना भारत के विकास में सहायक सिद्ध होगी? भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान अदा करेगी। शोध में प्राप्त आकड़े भविष्य में होने वाले विषय से संबंधित अध्ययनों के लिए एवं सरकार द्वारा भविष्य में बनाई जाने वाली नीतियों के लिए और शोध में संलग्न संस्था, शोधाथियों के लिए यह शोध रिपोर्ट महत्वपूर्ण एवं दिशासूचक साबित होंगी।

सहायक संदर्भ सूचीः

- R Rajeevan, Towards A Humane Environment Responsibilities of State, Role of Civil Society & Rights of Citizens, Gyan Books Pvt. Ltd. (Delhi, India).
- Dash Dhanalaxmi, Satapathy Mahendra K., People Who Make a Change (Men and Women in Environmental Movements).
- Issar Devendra, Communication Mass Media and Development, Unique Publication, Delhi.
- Joshi P.C., Communication and National Development, Anamika Publishers & Distributors (P) Ltd., 2002, New Delhi 110002, India.
- Das Arpana Dhar, Modern Environmental Ethics : A Critical Survey.
- Potter, W James, Media Literacy, 2011, Sage publication, New Delhi.
- Rangarajan Mahesh, Madhusudan M.D., Shahabuddin Ghazala, Nature Without Borders (Edited) Orient Blackswan Pvt. Ltd., 1/14, Asaf Ali Road, New Delhi-110002.
- Sharma Ruchir, The Rise and Fall of Nations: Ten Rules of Change in the Post - Crisis World (English), Publisher- Penguin UK, ISBN 10-0241188512, 2016.
- B. Verma, Environmntal Pollution: An Introduction, Publishers- Kunal Books Publishers.
- Chaturvedi Heramb, Allahabad School Of History 1915-1955, ISBN- 9788184303469.

रिपोर्टः

- Climate change 2014: impacts, adaptation, and vulnerability-WHO.
- Health events in the 2015 UN climate change conference of parties(COP21- 30 Nov- 2015), held in Paris.
- **Joint Statement issued at the conclusion of the, 22nd BASIC Ministerial Meeting on Climate Change, New Delhi, India, 7 April 2016.**
- Annual Report 2014-15, Government of India, Ministry of Environment, Forests and Climate Change.

बेवसाइट संदर्भः

1. http://www.epa.ie/&panel1-1
2. www.wikipedia.org/wiki/social/impact
3. http://allahabad.nic.in/history.htm
4. https://en.wikipedia.org/wiki/Swachh_Bharat_Abhiyan
5. http://cipet.gov.in/swachh.html#ad-image-22
6. http://www.who.int/topics/environmental_pollution/en/
7. History of Allahabad - Wikipedia, the free encyclopedia
8. http://www.environmentmagazine.org
9. http://www.nasa.gov

10. http://www.publishingindia.com
11. http://hindi.webdunia.com/article/indian-religion-kumbh-mela1.htmhttp://envfor.nic.in/content/joint-statement-issued-conclusion-22nd-basic-ministerial-meeting-climate-changenew-delhi-ind **(Joint Statement issued at the conclusion of the, 22nd BASIC Ministerial Meeting on Climate Change, New Delhi, India, 7 April 2016)**
12. http://swachhbharaturban.gov.in
13. https://gramener.com/swachhbharat/#?city=Allahabad
14. http://swachhbharaturban.gov.in/Whats_New.aspx

फोटो संदर्भः

1. https://www.google.co.in/imgres?imgurl=http%3A%2F%2Fstatic.dnaindia.com%2Fsites%2Fdefault%2Ffiles%2F2014%2F12%2F03%2F288506modicleanpti.jpg&imgrefurl=http%3A%2F%2Fwww.dnaindia.com%2Fbigpicture%2Fphotoswachhbharatabhiyanmodifiedinallahaad2039862&docid=ya4H2rm0gcb3BM&tbnid=vb_w_o42KTfrQM%3A&w=600&h=400&bih=623&biw=1366&ved=0ahUKEwitl.
2. https://www.google.co.in/imgres?imgurl=http%3A%2F%2Fwww.thehindu.com%2Fmultimedia%2Fdynamic%2F01441%2F28TH_SANGAM_DIRT_1441979f.jpg&imgrefurl=http%3A%2F%2Fwww.thehindu.com%2Fnews%2Fnational%2Fotherstates%2Fpostkumbhmelathesangampresentsanunholysight%2Farticle4661217.ece&docid=3pdfxJ3LZWF4M&tbnid=zUF4P3i6dK24aM%3A&w=636&h=426&bih.
3. https://www.google.co.in/imgres?imgurl=http%3A%2F%2Fwww.40kmph.com%2Fwpcontent%2Fuploads%2F2013%2F01%2FViewofRoadtoSangamAllahabadUttarPradesh.jpg&imgrefurl=http%3A%2F%2Fwww.40kmph.com%2Fcategory%2Fallahabad%2F&docid=hxR0NaJV0RSBYM&tbnid=PHMPZGGM9Hin4M%3A&w=800&h=600&bih=623&biw=1366&ved.
4. https://www.google.co.in/imgres?imgurl=http%3A%2F%2Fmedia.gettyimages.com%2Fphotos%2Fthepolicemenhelpincleanigthegarbagedumpedattheriverbankpictureid457926490&imgrefurl=http%3A%2F%2Fwww.gettyimages.com%2Fdetail%2Fnews-photo%2Fthe-policemen-help-in-cleaning-the-garbage-dumped-at-the-news.
5. https://www.google.co.in/imgres?imgurl=https%3A%2F%2Fswachhbharat.mygov.in%2Fsystem%2Fstorage%2Fserve%2F101625%2FIMG20151002WA0012.jpg%253Fitok%253D1%3Fitok%3D0pALmIJW&imgrefurl=https%3A%2F%2Fswachhbhayn%2Factivities%2Fswachhbharatswachhataabhiyanallahabadnagarnigamward&docid=B8K9wFRBXpyx3M&tbnid=2KMc_nTPP7iOKM%3A&w.
6. https://swachhbharat.mygov.in/activities/swachh-bharat-swachhata-abhiyan-allahabad-nagar-nigam-ward.
7. https://www.google.co.in/search?q=photo+allahabad&espv=2&biw=1366&bih=584&tbm=isch&imgil=NCx7GKBFmEl2OM%253A%253BQfb0ZW6q70g1cM%253Bhttps%25253A%25252F%25252Fen.wikipedia.org%25252Fwiki%25252FAllahabad&source=iu&pf=m&fir=NCx7GKBFmEl2OM%253A%252CQfb0ZW6q70g1cM%252C_&usg=__BDMLglp/